शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य
कवि – श्रीरामनरेश त्रिपाठी

Date ______ Page ______

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर –

प्रश्न:- 'पथिक' के द्वितीय सर्ग में मुनि ने पथिक को किस प्रकार का उपदेश दिया है?

उत्तर:- 'पथिक' खण्ड काव्य के द्वितीय सर्ग में कवि मुनि के द्वारा पथिक को कर्मण्यता का उपदेश देते हुए कहता है कि यह संसार हमारी कर्मस्थली है। यहाँ सभी को अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करना पड़ता है। संसार के जितने भी जड़, चेतन, स्थावर पदार्थ हैं सभी अपने-अपने काम लगे हैं। इस संसार के प्रत्येक प्राणी के जीवन का एक निश्चित उद्देश्य है जिसकी पूर्ति के लिए वह जीवन भर प्रयत्न करता है।

इस संसार में सभी अपने-अपने कार्य में व्यस्त हैं। सूर्य इस संसार को शोभा प्रदान करता है और चन्द्रमा अमृत की वर्षा करता है। इस संसार में कोई भी आलसी बनकर बैठा हुआ नहीं है। तुच्छ घास के जीवन का भी कोई न कोई उद्देश्य है। उसी से वह अपने कर्त्तव्य मय जीवन का अन्त कर देती है।

प्रश्न:- मुनि 'पथिक' को किस प्रकार कर्त्तव्य का बोध कराता है?

उत्तर:- 'पथिक' खण्ड काव्य में मुनि के द्वारा पथिक को विस्तार से उसे कर्त्तव्य का बोध कराता है। मुनि कहता है कि यह पृथ्वी माता स्नेह की मूर्ति और दयालु है। क्या उसके प्रति तुम्हारा कुछ भी कर्त्तव्य नहीं है? तुम्हारे परिवार वालों ने तुम्हें चलना सिखाया और भाषा का ज्ञान देकर हृदय की भावनाओं का मूर्त रूप दिखाने में मदद की है। क्या उनके प्रति तुम्हारा कोई कर्त्तव्य नहीं है? तुम्हें तो केवल अपनी ही चिन्ता है। तभी मस्त होकर एकांत में गीत गाते हो। तुम अकेले खाते-पीते और हँसते हुए मौज कर रहे हो। संसार से दूर रहकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना ही तुमने अपने कीर्ति का रूप समझ लिया है। परन्तु तुम्हीं सोचो कि इस संसार में तुम्हारे समान कौन सा व्यक्ति स्वार्थ के वशीभूत है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुरखसैनी, पूर्णियाँ
29/08/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र
दिगंत – भाग – 2, गद्य खण्ड
शीर्षक – उसने कहा था
लेखक – चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

Date ——— Page ———

सप्रसंग व्याख्या –

" बड़े-बड़े शहरों के इक्के गाड़ीवालों की जुबान के कोड़ों से जिसकी पीठ छिल गयी है और कान पक गए हैं, उनसे प्रार्थना है कि अमृतसर के बंबूकार्ट वालों की बोली का ~~मह~~ मरहम लगावें"

प्रसंग –

उत्तर :- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत – भाग-II के उसने कहा था पाठ से ली गई है। इसके लेखक हिन्दी के महान कहानीकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से 'गुलेरी' जी ने बंबूकार्ट वालों की बोलियों पर तीखा व्यंग्य किया है। अमृतसर के बंबूकार्ट वालों की बोलियाँ पर कहानीकार ने ध्यान आकृष्ट किया है, ये पंक्तियाँ उसी प्रसंग की है।

अमृतसर में बंबूकार्ट वाले बड़ी मीठी बोली में कटु बात को भी मधुर ढंग से कहते हैं। इनकी बोलियाँ सुनने में तो प्यारी लगती हैं किन्तु उनमें व्यंग्य की धार बड़ी पैनी होती है। दूसरे शहर के इक्के वाले जहाँ घोड़े को गालियाँ देते हैं, पैदल चलने वालों की आँखें न होने पर तरस खाते हैं और क्षोभ प्रकट करते हैं वहाँ अमृतसर के इक्के वाले बचो खालसाजी, हटो भाईजी, ठहरना भाई-जी, आने दो लाला जी, हटो बाछा जैसे मधुर शब्दों का संबोधन करते हुए पैदल चलने वाले को मार्ग से हटाते हुए गाड़ी आगे बढ़ाते हैं। दूसरे शहर में वे कोड़ों से घोड़ों की पिटाई करते हुए पीठ को घायल कर देते हैं। उनकी कर्कश बोलियों से सुनने-वाले के कान पक जाते हैं वहाँ अमृतसर वालों की मधुरवाणी द्वारा व्यक्त संबोधन सुनने में बड़ा प्यारा लगता है।

इन पंक्तियों में कहानीकार ने बड़े-बड़े शहरों के इक्केवालों की बदजुबानी की मार से जख्मी हुए लोगों को अमृतसर के बंबूकार्ट वालों की बोलियाँ रूपी मरहम को अपने घायल मन पर लगाने का संकेत किया है। बंबूकार्ट वालों की बोली अत्यन्त प्रिय, मनभावन और मधुर होती है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० अ० सं० महावि० जुबसैना, पूर्णियाँ
29/08/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

जयद्रथ-वध – काव्य
कवि - मैथिलीशरण गुप्त

Date: ________ Page: ______

प्रश्न :- जयद्रथ-वध काव्य से क्या सन्देश मिलता है? वर्णन करें।

उत्तर :- मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रवादी एवं मानवतावादी कवि हैं। उनका मानवतावादी दर्शन भारतीय साहित्य, समाज, धर्म और सांस्कृतिक संस्कारों से स्वयं ही उद्भुत हुआ है और इस पर वैष्णवी भावना का प्रभाव भी हुआ है। गुप्त जी का लेखन काल बीसवीं शताब्दी का प्रथम दशक है जिसमें राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलनों का सूत्रपात हो चुका था। इस राष्ट्रीय आन्दोलन में सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक आन्दोलनों और उससे हुए परिवर्तनों का भी स्पष्ट संकेत उस युग में प्राप्त होता है। गुप्त जी ने अपनी इन भावनाओं का प्रसार अनेक पौराणिक, ऐतिहासिक आख्यानों के माध्यम से किया है। आगे चलकर ये ही सभी भावनाएँ एक साथ उनके काव्यों में व्यापक रूप में दिखाई पड़ता है।

जयद्रथ-वध में मानवता का प्रश्न कवि ने उठाया है। दुर्योधन की भाँति अंग्रेजों ने तत्कालीन भारत को अपने शासन में रखा था। इसलिए समस्त भारतवासी न्याय एवं अधिकार से वंचित थे। कवि कहता है-

अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।

अधिकार के लिए लड़ने वाले न जाने कितने नवयुवकों आततायियों ने जबर्दस्ती मार डाला था।

मानव जीवन दुःख सुख की भावनाओं का भण्डार है। सभी पर दुःख पड़ते हैं किन्तु उस अवस्था में अचेत होकर बैठे रहना बुरी बात है। क्योंकि मानव यदि अपना कर्म करे तो अपने दुःखों को सुखों में परिणत कर सकता है।

पर चाहिए सबको सदा कर्तव्य अपना पालना।
हे विज्ञ! सो सब सोचकर यों शोक में न रहो पड़े।

राष्ट्रवादी कवि मैथिलीशरण गुप्त ने अभिमन्यु के माध्यम से भारतीय नवयुवकों के उत्साह के साथ अधर्म के विरुद्ध लड़ने की प्रवृत्ति का चित्रण किया है। अर्जुन के माध्यम से यहाँ के सुप्त शौर्य का वर्णन है। धर्मराज युधिष्ठिर के माध्यम से यहाँ के धार्मिक वृत्ति के लोगों का वर्णन

शेष आगे –

किया है।

गुप्त जी वैष्णव हैं। भक्ति भावना इनके सहज जीवन का आवश्यक अंग है। गुप्त जी राम भक्त हैं किन्तु राम और कृष्ण विष्णु के ही दो रूप हैं। अतः यहाँ पर उन्होंने कृष्ण के प्रति बड़ी भक्ति की भावनाएँ व्यक्त की है।

इस प्रकार मानवता, पुरुषार्थ में आस्था, राष्ट्रीयता की भावना तथा परमात्मा में आस्था आदि उद्देश्यों को लेकर गुप्त जी ने एक सफल खण्ड काव्य की रचना की है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कु० सं० महावि० कुलसेना, पूर्णियाँ
२१।०४।२०